शिक्षकों के लिए भाषा विज्ञान

❑ रमाकान्त अग्निहोत्री

अनुवाद : देवयानी

भाषा-शिक्षण में प्रारंभिक कक्षाओं के शिक्षक सामान्यत: पाठ्यवस्तु के अलावा व्याकरण पर ही निर्भर रहते हैं । वे इससे लगभग अनभिज्ञ हैं कि भाषा विज्ञान के रूप में एक ऐसा समृद्ध और बहुआयामी ज्ञान अनुशासन मौजूद है जिसकी बुनियादी जानकारी उनके भाषा-शिक्षण को कई गुणा प्रभावी और जीवंत बना सकती है । बल्कि भाषा विज्ञान बच्चों के सीखने की प्रक्रिया, ज्ञान निर्मिति, भाषा विशेष की प्रकृति और सांस्कृतिक संघटन जैसे क्षेत्रों को समझने में उनके लिए बहुत मददगार साबित हो सकता है ।

मेरा मानना है कि शिक्षक बनना चाहने वाले या किसी भी स्तर पर अध्यापन कार्य से जुड़े प्रत्येक व्यक्ति के लिए भाषा विज्ञान का आरंभिक ज्ञान होना बहुत जरूरी है । यह सही है कि हम ज्ञान कई माध्यमों से अर्जित करते हैं और सूचना संसाधन प्रक्रिया के बहुत बड़े भाग का इस्तेमाल करते हैं । फिर भी हमारा काफी सारा ज्ञानार्जन भाषा के जरिये होता है। हमारी तमाम अवधारणाएं भाषा विज्ञान की शर्तों के अनुरूप गढ़ी जाती हैं और सूचनाओं को आकार देने के लिए हम लगातार भाषा का इस्तेमाल करते हैं । यहां तक कि कई बार हमारे लिए भाषा और विचार को अलग-अलग कर पाना भी मुश्किल होता है। निस्संदेह अनेक ऐसे सफल अध्यापक होंगे जिन्होंने कभी भाषा विज्ञान का नाम भी न सुना हो, लेकिन ऐसे अध्यापक प्राय: भाषा की प्रकृति, संरचना, उपयोग व उसकी ध्वनियों को लेकर पर्याप्त संवेदनशील होते हैं। जरूरत इस बात की है कि हम ज्यादा से ज्यादा शिक्षकों में ऐसी संवेदनशीलता को संभव बनायें क्योंकि यदि शिक्षक भाषा के विभिन्न पक्षों से परिचित होंगे तो अध्ययन के सभी क्षेत्रों में ज्ञान का विस्तार संभव हो पाएगा।

भाषा विज्ञान को लेकर कई तरह के भ्रम व्याप्त हैं । बहुत से लोग समझते हैं कि इसका अर्थ मात्र भाषा को सीखना और सिखाना है । अनेक लोग यह मानते हैं कि भाषाविद् वह व्यक्ति है जो कई भाषाएं जानता है । जबकि यह सच नहीं है । बहुत से लोग यह भी कहते मिल सकते हैं कि भाषा का विज्ञान ही भाषा विज्ञान है लेकिन वे इससे ज्यादा कुछ नहीं बता पायेंगे। वे यह नहीं बता पायेंगे कि भाषा के इस विज्ञान में क्या बातें शामिल होती हैं। सबसे पहली बात तो यह कि भाषा विज्ञान का सरोकार विभिन्न स्तरों पर भाषा की संरचना से है । ध्वनि के स्तर पर यह इस बात को जांचता है कि कैसे एक ही भाषा में सीमित ध्वनियों से असीमित शब्दों की रचना की जा सकती है । हम मनमर्जी से ध्वनियों को आपस में नहीं मिला सकते बल्कि उनको मिलाने के कुछ खास नियम-कायदे हैं। इनमें से कुछ नियम भाषा विशेष के साथ जुड़े हो सकते हैं । शब्दों के स्तर पर भाषा विज्ञान यह देखता है कि कैसे किसी भाषा के शब्द आपस में जुड़े हुए हैं और कैसे एक भाषा के सभी शब्दों के कुछ सीमित समूह बन सकते हैं । प्रयेक समूह में शब्दों की ध्वनियों और अर्थ का परस्पर संबंध होता है । यह संबंध ही शब्द रचना नीतियों का निर्माण करता है जिससे सीखने वाले को वर्तमान शब्दों की जानकारी मिलती है और वह नए शब्द बनाना सीखता है। इसी तरह वाक्य के स्तर पर भी सीमित नियमों की सहायता से असीमित वाक्यों की रचना की जा सकती है । और यहां भी भाषा विशेष के नियमों के साथ ही कुछ ऐसे नियम भी लागू हो सकते हैं जो सब भाषाओं में एक जैसे हों । यदि सभी भाषाएं विभिन्न स्तरों पर कुछ नियमों का पालन करती हैं तो भाषा का अध्ययन हमें मानव मस्तिष्क ज्ञान की जटिल प्रणालियों को कैसे व्यवस्थित रूप देता है इसे समझने में मदद कर सकता है। यहां तक कि जब हम आपस में बात करते हैं तब भी हम कुछ नियमों का पालन कर रहे होते हैं । यदि हम उन नियमों का पालन नहीं करेंगे तो एक दूसरे की बात को समझ भी नहीं सकेंगे । किसी कहानी या निबन्ध को लिखने या पढ़ने में भी कुछ नियमों का पालन किया जाता है। इस तरह भाषा विज्ञान एक स्तर पर ध्वनियों, शब्दों, वाक्यों, वार्तालाप तथा विमर्श के नियमों के अध्ययन को कहा जा सकता है ।

पर भाषा विभिन्न स्तरों पर नियमों के समूह भर से कहीं बड़ी चीज है । भाषा हमारी पहचान को रेखांकित करती है । यह भाषा ही है जिसके द्वारा हम बता सकते हैं, हमारा संबंध किस जगह से है और अपने बीच में हम किस किस्म के लोगों को स्वीकार कर

सकते हैं। हम यह जान पाते हैं कि खान-पान, पहनावा, संस्कृति और धर्म के आधार पर कैसे हमारा समूह (माता-पिता, परिवार, मित्र, पड़ोसी आदि) दूसरों से अलग है। हम यह भी जान पाते हैं कि भाषागत व्यवहार की कौन सी भिन्नतायें हमें दूसरे समूह से अलग करती हैं। अक्सर हम भाषा को अपनी भिन्न पहचान को रेखांकित करने वाले चिन्ह के रूप में भी इस्तेमाल करते हैं ।

अध्यापक अक्सर यह भूल जाते हैं कि उनकी कक्षा में बच्चों की भाषागत पृष्ठभूमि अलग-अलग है और वे कक्षा में उनकी भाषा की उपेक्षा करते जाते हैं जिसका बच्चों की मानसिकता पर बहुत गहरा असर पड़ता है । भाषा के प्रति संवेदनशील अध्यापिका यह कोशिश करेगी कि कैसे वह अपनी कक्षा के बहुभाषी संसाधनों का ज्यादा से ज्यादा रचनात्मक उपयोग कर सके । भाषा सिर्फ हमारी पहचान को ही रेखांकित नहीं करती बल्कि वह हमारी अवधारणाओं के निर्माण के लिए आधारभूमि तैयार करती है। हम अपने वस्तुजगत को कहने के लिए जिन शब्दों का चयन करते हैं वे हमारी भाषा में काफी व्यवस्थित रूप से गुंथे हुए होते हैं । यह सही है कि हम अपने विचारों को विविध रूपों में व्यवस्था दे सकते हैं। जैसे कि हम किसी छवि को सोचें और उसका चित्र बनायें, या कि भाषा विज्ञान के दायरे से बाहर कुछ ध्वनियों को सोचें और उसे वाद्य संगीत या नृत्य के हाव-भाव के रूप में अभिव्यक्त करें । कविता की पंक्तियां या टेलीफोन नम्बर याद करने में दृश्य बिम्ब कई बार बहुत मदद करते हैं । वास्तुकार, इंजिनियर या डिजाइनरों के लिए अवधारणात्मक ज्ञान का एक बड़ हिस्सा शब्दों के बजाय दृश्यों में व्यवस्थित हो सकता है । लेकिन इन दृश्यों व भाषा के बीच की रेखा हमेशा बहुत स्पष्ट नहीं होती । हमारी अधिकांश विचार प्रक्रिया भाषा में ही संपन्न होती है । शिक्षा में यह बात खास तौर से लागू होती है । यदि हम भाषा की प्रकृति और उसकी संरचना के प्रति संवेदनशील होंगे तो बच्चों की उनके विचार जगत को समझने के ज्यादा रचनात्मक तरीकों की खोज करने में मदद कर सकेंगे । इसके अलावा भाषा विज्ञान का सरोकार किसी समूह विशेष में भाषा को बरतने की व्यक्ति दर व्यक्ति विविधता से भी जुड़ा है। जैसा कि हम जानते हैं कि एक ही समूह के भीतर भी एक ही शब्द को भिन्न-भिन्न रूपों में उच्चारित किया जाता है। इस उच्चारण भिन्नता (या शब्द अथवा वाक्यों के भिन्न किस्म के प्रयोग) में से कुछ को समाज में विशेष दर्जा हासिल हो जाता है जबकि शेष सभी पर हीनता का ठप्पा लगा दिया जाता है। इस तरह भाषा समाज में सत्ता और वर्चस्व के खेलों में भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। इस किस्म के विविध उपयोगों के बीच संवाद भाषा में बदलाव लाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

भाषाविदों को यह बात अत्यधिक रोमांचित करती है कि कैसे एक तीन साल का बच्चा किसी किस्म के व्यावहारिक प्रशिक्षण के बिना अपनी बात को कहने के लिए ध्वनियों, शब्दों तथा वाक्यों के निर्माण की इतनी जटिल व्यवस्था को आत्मसात कर लेता है। जबकि यहां तक कि उसके माता-पिता, शिक्षक, या संबंधी कोई इसके नियमों के बारे में ठीक-ठीक कुछ नहीं जानते हैं। या सभी उन नियमों को 'जानते' तो हैं लेकिन कोई भी उन्हें लेकर सजग नहीं है । भाषा के जटिल व्याकरण को कोई भी पूरी तरह समझा नहीं सकता । लेकिन बच्चे उसे बिल्कुल सही-सही आत्मसात कर लेते है । बच्चे अपनी भाषा में गलतियां नहीं करते। यहां तक कि कभी उनसे कोई गलती हो भी जाती है तो वे तुरंत उसमें संशोधन कर लेते हैं । इसलिए - भाषा कैसे अर्जित की जाती है ? भाषा की प्रकृति और उसकी संरचना क्या है? भाषा कैसे बदलती है? भाषा तथा समाज व भाषा तथा दिमाग के बीच संबंध की प्रकृति क्या है ? आदि कुछ अहम सवाल हैं जिनसे भाषाविद अक्सर जूझते हैं । यहां तक कि दिमागी चोट लगने की स्थिति में न्यूरोलॉजिस्ट सबसे पहले 'भाषा स्मृति' को जांचने की कोशिश करते हैं व उसे लौटाने के लिए उपचार शुरू करते हैं । आधुनिक समय में अनेक क्षेत्रों में अध्ययन के लिए भाषा के अध्ययन को जरूरी माना जाने लगा है। साहित्य के अध्ययन में इसका महत्व लगातार बढ़ता जा रहा है । कम्प्यूटर में भाषा के अध्ययन का एक नया ही क्षेत्र उभर रहा है । ऐसी विशिष्ट भाषाएं विकसित करने की कोशिश की जा रही है जिन्हें कम्प्यूटर समझ सकें । लेकिन अन्ततः हम यही चाहेंगे कि कम्प्यूटर मनुष्य की भाषा को समझे और मनुष्यों की ही तरह हमारी बातों का जवाब दे सके । लेकिन जब हम कम्प्यूटर से यह अपेक्षा रखते हैं कि वह हमारी भाषा को समझे तो यह और भी महत्वपूर्ण हो जाता है कि हम स्वयं अपनी भाषा की संरचना और प्रकृति को समझें ।

आइए ध्वनियों के स्तर पर भाषा कैसे बनती है इसके कुछ तरीकों को देखें । यदि आप जिन भाषाओं को जानते हैं उनके कुछ शब्दों की एक सूची बनाते हैं और उनकी ध्वनियों को बारीकी से जांचने की कोशिश करते हैं तो आप पाएंगे कि उनमें से ज्यादातर में बारी-बारी से स्वर v और व्यंजन c की ध्वनियां निकलती हैं। निश्चय ही कुछ शब्द ऐसे भी होंगे जिनमें केवल स्वर ही हों लेकिन ऐसे कोई शब्द नहीं होंगे जिनमें केवल व्यंजन हों और स्वर न हों।

आप किसी भी भाषा के कुछ शब्दों की सूची बना कर देखें तो शीघ्र ही पाएंगे कि उनके गठन के लिए एक खास तरीके का पालन किया गया है ।

स्वर या व्यंजन c और v	हिन्दी	अंग्रेजी
व्यंजन-स्वर cv	जा	Go
स्वर - व्यंजन vc	अब	At
व्यंजन-स्वर-व्यंजन- cvc	मेज	Table
व्यंजन-स्वर-व्यंजन-स्वर cvcv	माता	Mother

यहां व्यंजन और वर्ण को लेकर भ्रमित होने से बचाव की जरूरत है । (व्यंजन ध्वनि ध्वनि है, वर्ण उस ध्वनि को इंगित करने वाला दृश्य चिन्ह। 'प' जिसे आप कागज पर लिखा देखते हैं वह वर्ण है । इसे देखकर जो उच्चाकरण करते हैं वह व्यंजन ध्वनि है। - प्र. स.) जैसे कि अंग्रेजी शब्द psychology में पांच वर्ण हैं लेकिन इसका उच्चारण करते हुए पहले स्वर आई से पहले केवल एक व्यंजन स का ही उच्चारण किया जाता है । यदि इसी शब्द psychology को saikoloji लिखा जाये तो यह पूरी तरह व्यंजन-स्वर-व्यंजन-स्वर cvcv के नियम का पालन करता दिखाई देगा। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि व्यंजन-स्वर-व्यंजन-स्वर की परिपाटी का एक सार्वभौमिक चरित्र है । मनुष्य मात्र व्यंजन-स्वर-व्यंजन-स्वर cvcv की परिपाटी के अनुसार शब्दों का उच्चारण करना पसंद करता है । इसलिए यदि कोई स्कूल को सकूल या इसकूल कहे तो इसमें आश्चर्य नहीं करना चाहिए। यहां तक कि यदि स्वर या व्यंजन की ध्वनियां एक साथ आना चाहती हैं तो हम उन्हें अलग करने की कोशिश करते हैं । जैसे अंग्रेजी में a book कहते हैं लेकिन an apple कहते हैं । आखिर apple से पहले n क्यों लगाते हैं ? क्योंकि हम दो स्वरों को एक साथ नहीं बोलना चाहते। इसी तरह स्कूल में भी हम दो स्वरों के एक साथ उच्चारण से ही बचना चाहते हैं और उसके उच्चारण में गलती करते हैं । बांग्ला में 'सीतार बाड़ी' 'सीता का घर' में सीता के बाद केवल र लगाते हैं लेकिन 'रामेर बाड़ी' 'राम का घर' में राम के साथ ए का स्वर मिलाते हैं तो इसलिए कि म भी एक व्यंजन है और उसके बाद लगातार एक और व्यंजन र का उच्चारण हम नहीं करना चाहते । हम अपनी भाषा की ध्वनियों में स्वर-व्यंजन-स्वर-व्यंजन cvcv की परिपाटी को बनाए रखना चाहते हैं ।

निश्चय ही इसका यह मतलब भी नहीं है कि मानव भाषा में व्यंजन ध्वनि समूहों वाले शब्द होते ही नहीं हैं । बल्कि प्रत्येक भाषा में कुछ ऐसे शब्द होते हैं । लेकिन परिपाटी की प्रमुखता को देखते हुए स्पष्ट है कि ऐसे शब्द बहुत थोड़े होते हैं । इतना ही नहीं ऐसे शब्द कुछ खास नियमों में बंधे भी होंगे । जैसे कि हिन्दी में मैं एक शब्द कहता हूं 'पल' [moment] ।

अब मैं इस पल के 'प' की जगह कोई दूसरा व्यंजन रख कर दूसरा शब्द बना सकता हूं । जैसे - फल, बल, कल, मल, नल आदि । अब यदि cvcv की परिपाटी तर्कसंगत है तो एक से अधिक स्वर अथवा व्यंजन एक साथ आने पर इस तरह की छूट लेकर शब्द बनाना संभव नहीं होना चाहिए । और वाकई हम ऐसा ही पाएंगे । अब कोई ऐसा शब्द याद करने की कोशिश करें जिसकी शुरूआत में चार व्यंजन ध्वनियां एक साथ आती हों। ऐसा कोई शब्द आपको नहीं मिलेगा । अंग्रेजी में किसी भी शब्द की शुरूआत में चार व्यंजन ध्वनियां एक साथ नहीं आ सकतीं । यहां तक कि ऐसी भाषाएं गिनी-चुनी ही होंगी जिनमें किसी शब्द में एक साथ चार व्यंजन ध्वनियां एक साथ आती हों। हिन्दी, बांग्ला, मराठी, तमिल, तेलुगु, उड़िया आदि भाषाओं में तो ऐसा संभव नहीं है । हां इन सभी भाषाओं में अनेक शब्द ऐसे हो सकते हैं जिनकी शुरूआत में तीन व्यंजन ध्वनियां एक साथ आती हों । जैसे अंग्रेजी में कुछ उदाहरण देखें ।

Stirke	Split	Squat	Structure	Strange
Screw	String	Street	Squash	Strong
Strength	Spray	Script	Splash	

आप पायेंगे कि अंग्रेजी में एक साथ तीन व्यंजन ध्वनियों वाले शब्द के निर्माण के लिए आपको बहुत सख्त नियमों का पालन करना होगा । अंग्रेजी में ऐसा कोई भी शब्द जिसके शुरू में तीन व्यंजन ध्वनियां एक साथ आती हों वह s ध्वनि से शुरू होने वाला शब्द ही हो सकता है। यही नहीं उसमें दूसरे और तीसरे व्यंजन के रूप में भी विकल्प बहुत सीमित ही होते हैं । जैसे हिन्दी के पल शब्द में जिस किस्म की छूट हम लेते हैं, उसी तरह की छूट अंग्रेजी के rat, mat, fat, sat, bat, cat आदि शब्दों में ली जा सकती है । लेकिन ऊपर सारणी में दिए गए शब्दों के संदर्भ में देखें तो पाएंगे कि अंग्रेजी के एक साथ तीन व्यंजन ध्वनियों से शुरू होने वाले शब्दों में दूसरी व्यंजन ध्वनि प, ट या क ही हो सकती है। इसी तरह इन शब्दों में तीसरी व्यंजन ध्वनि य, र, ल, व की ही हो सकती हैं । जैसे कि शब्द split में पहली ध्वनि स, दूसरी प और तीसरी ल की है । इसी तरह शब्द squash में पहली ध्वनि स, दूसरी क और तीसरी व की है । इस तरह इससे भी इनकार नहीं किया जा सकता कि व्यंजन-स्वर-व्यंजन-स्वर cvcv यह शब्द में ध्वनियों का सामान्य नियम है जबकि तीन व्यंजन के बाद स्वर cccv अंग्रेजी

का एक खास नियम है ।

अब हम शब्दों के स्तर पर बात करते हैं । मानव मस्तिष्क में शब्द विभिन्न रूपों में बनते होंगे । कई बार हम किसी शब्द को उसकी ध्वनियों के आधार पर याद करते हैं तो कई बार उसके अर्थ के आधार पर या वह जिस श्रेणी से संबंधित है इसके आधार पर हम उसे याद करते हैं। उदाहरण के लिए अंग्रेजी का एक सामान्य नियम है कि संज्ञा को क्रिया के रूप में भी काम में लिया जा सकता है । जैसे कि walk, talk, chair, table, drink, water आदि शब्दों को संज्ञा के रूप में भी इस्तेमाल किया जाता है और क्रिया के रूप में भी । अब इस बात पर भी आश्चर्य किया जा सकता है कि अंग्रेजी बोलने वाले इन शब्दों की कैसे अलग से पहचान कर उन्हें याद रख सकते हैं ? हम पहले भी इस बारे में चर्चा कर चुके हैं कि कैसे ध्वनि तथा शब्द के स्तर पर काफी जटिल अन्त:क्रिया होती है। अब अंग्रेजी की ध्वनि s को sip, spin, spray, miss, basic आदि शब्दों में देखें, यहां इस ध्वनि का अलग से कोई अर्थ नहीं है । यहां यह एक ध्वनि मात्र है । लेकिन cats और eats जैसे शब्दों में इसका अर्थ अलग-अलग होगा। cats में जहां इस ध्वनि का प्रयोग बहुवचन के लिए किया गया है वहीं eats में यह ध्वनि तृतीय पुरुष एक वचन व वर्तमान काल को इंगित करती है । अंग्रेजी जानने वाली कोई बच्ची कैसे बहुत छोटी उम्र में s के इन भिन्न-भिन्न उपयोगों से परिचित हो जाती है कि यह ध्वनि बहुवचन को इंगित करती है अथवा वर्तमान काल, तृतीय पुरुष और एक वचन को? कोई भी उसे इन विभिन्नताओं के बारे में नहीं बता सकता लेकिन तीन साल की उम्र में ही वह न सिर्फ व्यंजन-स्वर-व्यंजन-स्वर cvcv की परिपाटी से परिचित हो जाती है बल्कि एक साथ तीन व्यंजन ध्वनियों के उच्चारण वाले शब्दों के प्रयोग के साथ ही साथ वह s ध्वनि को भी उसके भिन्न-भिन्न अर्थों में बखूबी काम में लेना शुरू कर देती है । यही नहीं अलग-अलग शब्दों में इस ध्वनि के अलग-अलग तरह से उच्चारण को भी वह इसी उम्र में सीख लेती है । जैसे कि

Cap	Caps
Cat	Cats
Rack	Racks
Rib	Ribs
Dog	Dogs
Bed	Beds
Bus	Buses
Church	Churches

बच्चे को यहां यह भी पहचानना होगा कि बहुवचन के लिए काम में ली जाने वाली s की ध्वनि cap, cat, rack,आदि प, ट और क से समाप्त होने वाले शब्दों में तो स की तरह ही उच्चारित की जाएगी लेकिन rib, bed, और dog जैसे b, d और g से खत्म होने वाले शब्दों में इसका उच्चारण ज की तरह किया जाएगा जबकि s, z, c, j आदि से खत्म होने वाले शब्दों में इसका उच्चारण 'इज' कह कर किया जाएगा । शब्द अपने रूप तथा अर्थ दोनों के ही लिहाज से एक दूसरे से बहुत जटिल रूप में संबंद्ध होते हैं।

अध्यापक अक्सर यह भूल जाते हैं कि उनकी कक्षा में बच्चों की भाषागत पृष्ठभूमि अलग–अलग है और वे कक्षा में उनकी भाषा की उपेक्षा करते जाते हैं जिसका बच्चों की मानसिकता पर बहुत गहरा असर पड़ता है । भाषा के प्रति संवेदनशील अध्यापिका यह कोशिश करेगी कि कैसे वह अपनी कक्षा के बहुभाषी संसाधनों का ज्यादा से ज्यादा रचनात्मक उपयोग कर सके। भाषा सिर्फ हमारी पहचान को ही रेखांकित नहीं करती बल्कि वह हमारी अवधारणाओं के लिए आधारभूमि तैयार करती है।

हिन्दी के शब्द चल को देखें । विभिन्न प्रकार की शब्द निर्माण प्रक्रियाओं के जरिए यह अन्य अनेक हिन्दी शब्दों से संबंद्ध है । जैसे चलता, चलती, चलते, चलो, चलिए, चले, चलेगा, चला, चली, चाल, चालक, चलना आदि । यह शब्द निर्माण प्रक्रियाएं व्याकरण की विभिन्न श्रेणियों को भी अपने में समेट लेती हैं जैसे कि संज्ञा और क्रिया, चलो एक क्रिया है जबकि चाल संज्ञा है । इस तरह इन शब्द निर्माण प्रक्रियाओं का एक बेहद जटिल तंत्र मानव मस्तिष्क में बना हुआ है लेकिन उस भाषा के बोलने वालों को वह बहुत आसानी से समझ में भी आ जाता है । इसीलिए कोई व्यक्ति किसी नए शब्द को सुनती है तो उससे जुड़े अन्य अनेक शब्दों के तंत्र की रचना वह स्वत: ही कर लेती है ।

अब हम वाक्यों के स्तर पर आते हैं जहां शब्द एक खास व्यवस्था में बंधे होते हैं । जैसे अंग्रेजी के इस वाक्य को देखें

"The boy who is reading a book is my friend."

1 2 3 4 5 6 7 8 9 10

इस वाक्य में दस शब्द हैं । क्या हम इन्हीं शब्दों को किसी भी क्रम में रख कर अंग्रेजी का कोई स्वीकार्य वाक्य बना सकते हैं? कदाचित यह संभव नहीं है । शब्द बिना किसी व्यवस्था के नहीं रखे जा सकते । यह हो सकता है कि कुछ भाषाओं में कुछ दूसरी भाषाओं से ज्यादा लचीलापन हो लेकिन सभी में शब्दों को एक खास क्रम में रखने की जरूरत बनी रहती है । उल्लेखनीय है किभाषा अलग-अलग शब्दों के रूप में नहीं बल्कि शब्दों के समूह के रूप में काम करती है जिन्हें हम संघटक अथवा वाक्यांश कह सकते हैं। जब हम एक प्रकार के वाक्य को किसी दूसरे रूप में परिवर्तित करते हैं तो हम उस वाक्य में प्रयुक्त वाक्यांशों पर काम करते हैं शब्दों पर नहीं । यहां दिए गए उदाहरण वाक्य को यदि हमें एक सवाल के रूप में कहना होगा तो हम कहेंगे -

"Is the boy who is reading a book my friend."

8 1 2 3 4 5 6 7 9 10

यहां हम देखते हैं कि इस वाक्य को सवाल के रूप में बदलने के लिए दूसरी बार आए is को आठवें क्रम से उठाकर वाक्य के आरंभ में रखा गया है । वाक्य में पहली बार यानि चौथे क्रम पर आए is को नहीं छेड़ा गया है क्योंकि वह एक वाक्यांश 'who is reading a book' का हिस्सा है । अब कुछ हिन्दी के उदाहरण देखें -

(अ) राम को सेब अच्छा लगता है ।
1 2 3 4 5 6
(अ) राम को क्या अच्छा लगता है ?
1 2 3 4 5 6
(ब) राम कल शाम चार बजे घर गया ।
1 2 3 4 5 6 7
(ब) राम कल शाम चार बजे कहां गया ?
1 2 3 4 5 6 7
(स) राम चार बजे घर गया ।
1 2 3 4 5
(स) राम कितने बजे घर गया ।
1 2 3 4 5

यहां तीन वाक्यों के जोड़े (अ), (ब) और (स) हैं, तीनों में पहली बार एक सादा वाक्य कहा गया है जबकि दूसरी बार उसे सवाल के रूप में कहा गया है। लेकिन प्रत्येक उदाहरण के दोनों वाक्यों में एक परस्पर संबंध है। पहले उदाहरण में क्या का जवाब सेब है तो वाक्य में दोनों शब्दों का स्थान एक ही है, दोनों क्रम में तीसरे स्थान पर ही आए हैं । यही नियम अन्य दोनों उदाहरणों में भी नजर आता है । विचार तथा सामाजिक व्यवहार के स्तर पर नियमों में बंधी भाषा की प्रकृति के बारे में चर्चा करने से पहले हम हिन्दी के कुछ उदाहरण और देख लें -

(1) राम खाना खाता है ।
(2) सीता खाना खाती है ।
(3) राम लस्सी पीता है ।
(4) सीता लस्सी पीती है ।
(5) राम ने खाना खाया ।
(6) सीता ने खाना खाया ।
(7) राम ने लस्सी पी ।
(8) सीता ने लस्सी पी ।
(9) राम ने सीता को मारा ।
(10) सीता ने राम को मारा ।

यहां पहले चार वाक्यों में हम कर्ता और क्रिया के बीच एक सीधी संगति देखते हैं । राम पुल्लिंग है इसलिए क्रिया पुल्लिंग को सूचित करती है जैसे खाता में आ, सीता स्त्रीलिंग है इसलिए क्रिया स्त्री लिंग को सूचित करती है जैसे खाती में ई । इन वाक्यों में इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि खाना पुल्लिंग है और लस्सी स्त्रीलिंग । अब वाक्य संख्या पांच से आठ को देखें तो यहां विषय तथा क्रिया के बीच की वह संगति लुप्त हो जाती है। अब क्रिया की संगति कर्म के साथ नजर आती है। लेकिन वाक्य संख्या 9 और 10 में तो क्रिया की कोई संगति न विषय के साथ नजर आती है और न ही वस्तु के साथ । इस तरह हम यह पाते हैं कि भाषाओं की संरचना ध्वनियों और शब्दों के स्तर पर ही नहीं वाक्य निर्माण के स्तर पर भी अत्यंत जटिल होती है ।

अब हम संवाद के स्तर पर बात करते हैं । कोई यदि आपसे पूछे कि 'कितना बजा है ?' तो इसका जवाब आप 'पांच' या 'पता नहीं' या 'मेरे पास घड़ी नहीं है' तो दे सकते हैं लेकिन 'हां' या 'नहीं' या 'पेड़ हरे होते हैं' नहीं दे सकते । यानि संवाद के कुछ नियम होते हैं ।

अंग्रेजी के शब्द 'you' के लिए कई भाषाओं में कई-कई शब्द काम में लिये जाते हैं । किसी में दो, किसी में तीन और किसी किसी में चार या पांच तक भी जैसे हिन्दी में तीन शब्दों 'आप', 'तुम', 'तू' सब का प्रयोग अंग्रेजी के 'you' के लिए ही किया जाता है । लेकिन आप अपने 'पिता' या 'अध्यापक' को 'आप' कह कर संबोधित करेंगे जबकि मित्र को तू या तुम बुलाएंगे । अब प्रेमचंद की कहानी के इस अंश को देखें-

झोरी के पास दो बैल थे - हीरा और मोती । दोनों में बहुत प्यार था । वे नांद में एक साथ मुंह डालते और एक ही साथ हटाते। झोरी उनके चारे पानी का बड़ा ध्यान रखता था । वह कभी भूलकर भी उन्हें मारता-पीटता नहीं था ।

अब इस अंश को रेखांकित शब्दों के बिना पढ़ने की कोशिश करें । आप पाएंगे कि यह तमाम शब्द उस उद्धरण को बांधे रखने में अहम् भूमिका निभाते हैं । इनमें से ज्यादातर शब्द किसी ऐसे व्यक्ति या वस्तु के लिए आए हैं जिनका पहले उल्लेख किया जा चुका है । जैसे-

दोनों हीरा और मोती के लिए
वे भी हीरा और मोती के लिए
उनके भी हीरा और मोती के लिए
उन्हें भी हीरा और मोती के लिए
वह झोरी के लिए

अब इस अंश को बार-बार हीरा और मोती का नाम लेते हुए पढ़ने की कोशिश करें । इसी तरह 'और' व 'या' जैसे शब्द वाक्यों को एक साथ बांधे रखने या उन्हें सुसंगत वाक्य बनाने का काम करते हैं ।

उम्मीद है कि अब तक हम यह देख पाए होंगे कि भाषा एक अत्यधिक व्यवस्थित और जटिल संघटना है । लेकिन जैसा कि हमने पहले भी कहा हमें यह अहसास होना चाहिए कि भाषा कोई पेड़ या नदी की तरह बाहरी वस्तु नहीं है। बल्कि वह एक व्यक्ति तथा समूह दोनों के ही रूप में हमारे अस्तित्व का हिस्सा है। एक व्यक्ति के रूप में हम अपने आसपास के यथार्थ को भाषा के आधार पर व्यवस्थित करते हैं । हम कौनसे रंगों को पृथक-पृथक पहचान सकते हैं और पारिवारिक संबंधों के लिए कितने विभिन्न नामों का इस्तेमाल करते हैं, यह सब हमारी भाषा और सामाजिक अंत:क्रिया से तय होता है । इस तरह दुनिया भर की भाषाओं में अनेक समानताएं हो सकती हैं और उनमें से प्रत्येक को अनेक स्तरों पर बहुत ही परिष्कृत रूप से व्यवस्थित किया जाता है। इस रूप में हम यह भी कह सकते हैं कि संसार की सभी भाषाऐं एक जैसी हैं । लेकिन जैसे ही हमें इस बात का अहसास होता है इसके साथ ही हमें यह भी मालूम होना चाहिए कि भाषा को हम किस तरह बरतते हैं वह हमारे दैनन्दिन जीवन का सामाजिक सांस्कृतिक रूप से निर्मित हिस्सा है जो हमें हमारे भूत और भविष्य से जोड़ता है । प्रत्येक समुदाय के गणना करने के तरीके अलग-अलग होते हैं, चीजों को बांटने के तरीके अलग-अलग होते हैं, दूरी को बताने के तरीके अलग अलग होते हैं, संबोधित करने के तरीके अलग-अलग होते हैं । भाषा प्रत्येक बालक के अस्तित्व का एक अनिवार्य हिस्सा है और स्कूल में प्रवेश के समय से ही उसके अस्तित्व की पहचान का यह भाग उसके सामने पर्याप्त स्पष्ट होता है ।

यदि शिक्षक ऊपर बताई गई तमाम बातों से परिचित हों तो वे सीखने की स्वस्थ परम्पराओं को बढ़ावा देने के लिए बहुत कुछ कर सकते हैं । वे न सिर्फ स्कूलों में बच्चों को पहुंचने वाली मनोवैज्ञानिक क्षति से बच्चों को बचा सकते हैं बल्कि स्कूल में अपेक्षाकृत ज्यादा लोकतांत्रिक वातावरण बनाने में भी मददगार हो सकते हैं । यहां तक कि इससे कक्षाएं, खासतौर से प्रारंभिक शिक्षा के विद्यालयों की कक्षाएं ज्यादा दिलचस्प, जीवन्त और चुनौतीपूर्ण स्थान साबित हो सकती हैं जहां बच्चे सिर्फ आनन्दायी गतिविधियों में ही संलग्न नहीं रहेंगे बल्कि वे स्वयं अवलोकन, वर्गीकरण, श्रेणीकरण, बहस, अन्वेषण तथा सामान्यीकरण करना सीखेंगे । साथ ही वे एक दूसरे की भाषा, संस्कृति और ज्ञान का सम्मान भी करना सीखेंगे।

इससे पहला सबक तो यह मिलता है कि कक्षा में बोली जाने वाली प्रत्येक भाषा के साथ समान व्यवहार किया जाना चाहिए । खासतौर से भारत जैसे देश में जहां गांव के स्तर तक भी सभी बच्चे एक ही भाषा बोलें, यह प्राय: असंभव सा है । हमारी शिक्षा प्रणाली में होता यह है कि कक्षा में क्षेत्रीय, प्रादेशिक या सरकारी भाषा सारी कक्षा पर हावी रहती है। बहुत से बच्चों के लिए यह भाषाएं भी किसी विदेशी भाषा के ही समान अपरिचित होती हैं ।

इस बहस का पहला सबक तो यह है कि कक्षा में बोली जाने वाली प्रत्येक भाषा के साथ समान व्यवहार किया जाना चाहिए । खासतौर से भारत जैसे देश में जहां गांव के स्तर तक भी सभी बच्चे एक ही भाषा बोलें, यह प्राय: असंभव है। हमारी शिक्षा प्रणाली में होता यह है कि कक्षा में क्षेत्रीय, प्रादेशिक या सरकारी भाषा सारी कक्षा पर हावी रहती है। बहुत से बच्चों के लिए यह भाषाएं भी किसी विदेशी भाषा के ही समान अपरिचित होती हैं । प्राय: इस बात पर ध्यान ही नहीं दिया जाता कि एक संथाली बच्चे के लिए भोजपुरी, हिन्दी या अंग्रेजी समान रूप से अपरिचित भाषाएं हो सकती हैं; इस बात पर भी प्राय: ध्यान नहीं दिया जाता कि बहुत से बच्चों के स्कूल बीच में छोड़ देने के पीछे एक बड़ा कारण यह भी हो सकता है कि लगातार अनेक वर्षों तक वहां आने के बावजूद वे अध्यापक या अध्यापिका क्या बोल रही हैं उसका कोई अनुमान भी नहीं कर पाते। इसके लिए शिक्षक को कक्षा में आने वाले सभी बच्चों की भाषाओं को सीखने की जरूरत नहीं है लेकिन निश्चय ही उन्हें ऐसे कुछ तरीके खोजने होंगे जिनसे कक्षा के बहुभाषीय संसाधनों का बेहतर उपयोग किया जा सके । निश्चय ही इस प्रक्रिया में स्वयं उन्हें भी बहुत कुछ सीखना होगा।

उन्हें इस मानसिकता से उबरना होगा कि मैं तो सब कुछ जानता हूं; और बच्चे कुछ भी नहीं जानते । इस दृश्य की कल्पना करें जो कि बहुत आम दृश्य भी हो सकता है कि बिहार के किसी एक गांव में **हिन्दी/मैथिली** बहुल एक कक्षा में दो या तीन बच्चे संथाली हैं । कल्पना करें कि इनमें से एक संथाली बच्चा हिन्दी भी अपेक्षाकृत अच्छी तरह जानता है । अब शिक्षक स्वयं एक विद्यार्थी की तरह कक्षा के अन्य बच्चों के साथ पीछे की सीट पर जा कर बैठ जाए और वह संथाली बच्चा जो कि कक्षा तीन या चार में पढ़ता है कोई छोटी सी संथाली कविता सुनाए । शुरूआत में यह थोड़ा अजीब लग सकता है लेकिन जल्दी ही यह बहुत दिलचस्प अभ्यास साबित हो सकता है। अब शिक्षक इस कविता को ब्लैकबोर्ड पर देवनागरी में लिखने में इस बच्चे की मदद कर सकती है । कुछ संथाली ध्वनियों को लिखने के लिए कुछ नए प्रतीकों की खोज करने की भी जरूरत पड़ सकती है । दोनों भाषाओं को जानने वाला संथाली बच्चा अब प्रत्येक संथाली शब्द का हिन्दी अर्थ बताए । बच्चों के समूह बना कर उनसे इस संथाली कविता के अर्थ को संप्रेषित कर सके ऐसी हिन्दी कविता लिखने को कहा जाए । संथाली बच्चे इन कविताओं को सुधारने में बहुत से सुझाव दे सकते हैं । आइए देखें कि इस छोटी सी गतिविधि में क्या होता है -

(1) यहां बच्चे मंच पर हैं और रचनात्मक व चुनौतीपूर्ण कार्य में संलग्न है ।

(2) अध्यापक यहां एक अहम प्रतिभागी है लेकिन अंतिम तौर पर प्रामाणिक व्यक्ति नहीं । वह स्वयं भी कुछ नया सीख रही है ।

(3) शिक्षा शास्त्रीय प्रक्रिया में सबकी साझा भूमिका है - यहां सिर्फ शिक्षक ही वक्ता की भूमिका में नहीं है ।

(4) एक ऐसी भाषा जिसका कभी पाठ्यक्रम में अलग से उल्लेख नहीं किया गया और जो हमेशा कक्षा में उपेक्षित ही रही है वह यहां एक सम्मानजनक स्थान हासिल कर लेती है। इस तरह की गतिविधियों का बारम्बार प्रयोग न सिर्फ भाषाओं को समृद्ध बनाता है बल्कि उनके बोलने वालों के व्यक्तित्वों को भी समृद्ध बनाता है।

(5) भाषा को यहां समग्रता के साथ बरता गया है- यहां बोलने, पढ़ने, समझने, लिखने आदि को अलग-अलग दक्षताओं के रूप में नहीं लिया गया है बल्कि कविता के रूप में यह सारी चीजें एक दूसरे से गुंथीं हुई हैं और उन्हें इस तरह बरता गया है कि बच्चे उसे आसानी से संभाल सकें ।

(6) यहां होने वाली चर्चा के जरिए कई तरह की भाषा विज्ञान संबंधी गतिविधियां शुरू की जा सकती हैं । यहां किसी एक तयशुदा सही जवाब तक नहीं पहुंचना भी एक महत्वपूर्ण बात है। जैसे कि बच्चे ये खोजने की कोशिश कर सकते हैं कि क्या हिन्दी और संथाली दोनों भाषाएं व्यंजन-स्वर-व्यंजन-स्वर cvcv की परिपाटी पर चलती है या नहीं । यदि वे कक्षा 6 और 7 के बच्चे हैं तो वे यह जानने की कोशिश भी कर सकते हैं कि क्रिया वाक्य के बीच में आती है या अंत में या फिर लिंग विभेद को हिन्दी में जिस तरह से अभिव्यक्त किया जाता है वैसे ही संथाली में भी किया जाता है या नहीं । या हिन्दी और संथाली में बहुवचन को किस तरह अभिव्यक्त किया जाता है, वगैरह ।

(7) ऊपर दिये गये उदाहरण के पीछे मूल इरादा हिन्दी या संथाली के व्याकरण को जानना नहीं है बल्कि आगे चल कर इस तरह की गतिविधियां अवलोकन, तुलना, स्मृति, विश्लेषण तथा संश्लेषण सहित बच्चों की तमाम संज्ञानात्मक क्षमताओं को तेज करेंगी ।

इस सूची को हम और भी बहुत बढ़ा सकते हैं । कक्षा में इस तरह की गतिविधियों को प्रयोग में लाने से शिक्षक को बेहतर शिक्षाशास्त्रीय गतिविधियों के लिए भाषा की समझ के महत्व तथा बच्चों के समग्र संज्ञानात्मक विकास का अहसास होता है ।

इस तरह भाषा की प्रकृति व संरचना के बारे में संतुलित परिचय से शिक्षकों का कक्षा में नवीन गतिविधियों को प्रयोग में लाने का हौंसला बढ़ता है । उन दो स्थितियों की कल्पना करें जहां एक में बच्चों का एक समूह कुछ सरल वाक्यों के साथ माथापच्ची करने में लगा है और वे सही वाक्य क्या हों यह तलाश करने की कोशिश कर रहें हैं । दूसरी तरफ कुछ बच्चे कक्षा में उन तरीकों पर चर्चा कर रहे हैं जो वे अपने दोस्तों, अभिभावकों, अध्यापकों या माता-पिता के साथ अपने मतभेदों को कहने के लिए काम में लाते हैं । दोनों उदाहरणों में वे किस किस्म की भाषा विज्ञान संबंधी अभिव्यक्ति का इस्तेमाल कर रहे होंगे ? यदि शिक्षक भाषा के प्रति संवेदनशील हो तो उसे किसी गतिविधि पुस्तिका की जरूरत नहीं पड़ेगी ।

भाषा को ज्यादा समय देना शुरू करते ही शिक्षक को भाषा, सत्ता और समाज के बीच का संबंध भी समझ में आने लगेगा । उसे अहसास होने लगेगा कि जमीन, पैसा और पानी की तरह ही भाषा भी शोषण के एक उपकरण के रूप में इस्तेमाल की जाती है। हम अक्सर अपने अधिकारियों, साथियों तथा नौकरों के साथ अलग-अलग किस्म की भाषा का व्यवहार करते हैं । शिक्षकों से भी यह पूछा जाना चाहिए कि क्या वे एक ही कक्षा में अलग-अलग बच्चों के साथ अलग-अलग किस्म की भाषा का इस्तेमाल करते हैं ? ◆